आरती जगदीश जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।।ॐ जय०॥ टेक ॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का ।स्वामी०।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।ॐ जय०॥१॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किस की । स्वामी०।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं किस की ।।ॐ जय०॥२॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी । स्वामी०।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय०॥ ३॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। स्वामी०।
मैं मुर्ख खलकामी, कृपा करो भरता ।। ॐ जय०॥ ४॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति । स्वामी०।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ।। ॐ जय०॥ ५॥

दीनबंधु दुःखहर्ता, ठाकुर तम मेरे । स्वामी०।
अपने हाथ उठाओ, द्वार मैं पड़ा तेरे।। ॐ जय०॥ ६॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी०।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ जय०॥ ७॥